सद्गुरु की आरती

आरती करूँ सद्गुरु की करूँ सद्गुरु की प्यारे गुरुवर की,
आरती करूँ गुरुवर की। [ध्रुवपद]

जय गुरुदेव अमल अविनाशी, ज्ञानरूप अन्तर के वासी,
पग-पग पर देते प्रकाश, जैसे किरणें दिनकर की।
आरती करूँ गुरुवर की॥ १ ॥

जब से शरण तुम्हारी आए, अमृत-से मीठे फल पाए,
शरण तुम्हारी क्या है छाया, कल्पवृक्ष तरुवर की।
आरती करूँ गुरुवर की॥ २ ॥

ब्रह्मज्ञान के पूर्ण प्रकाशक, योगज्ञान के अटल प्रवर्तक,
जय गुरुचरणसरोज मिटा दी, व्यथा हमारे उर की।
आरती करूँ गुरुवर की॥ ३ ॥

अन्धकार से हमें निकाला, दिखलाया है अमर उजाला,
कब से जाने छान रहे थे, ख़ाक सुनो दर-दर की।
आरती करूँ गुरुवर की॥ ४ ॥

संशय मिटा विवेक कराया, भवसागर से पार लँघाया,
अमर प्रदीप जलाकर कर दी, निशा दूर इस तन की।
आरती करूँ गुरुवर की॥ ५ ॥

भेदों बीच अभेद बताया, आवागमन विमुक्त कराया,
धन्य हुए हम पाकर धारा, ब्रह्मज्ञान निर्झर की।
आरती करूँ गुरुवर की ॥ ६ ॥

करो कृपा सद्गुरु जगतारण, सत्पथदर्शक भ्रान्ति निवारण,
जय हो नित्य ज्योति दिखलाने वाले लीलाधर की।
आरती करूँ गुरुवर की ॥ ७ ॥

मुक्तानन्द हे सद्गुरु दाता, शक्तिपात के दिव्य प्रदाता,
करके वास गणेशपुरी, भवबाधा हर ली जन की।
आरती करूँ गुरुवर की ॥ ८ ॥

ॐ चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्।
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ॐ। जो चैतन्यस्वरूप, शाश्वत, शान्त, आकाश से परे,
निरंजन, नाद-बिन्दु-कला से परे हैं,
उन श्रीगुरुदेव को नमस्कार है।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।